Faculty Of Education
Class: M.A. I Sem (Hindi)
Paper I : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उनका इतिहास -I
Paper Code: Hin -101

कोर्स ऑब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना। मध्यकालीन साहित्य से संबंधित अवधारणाओं और उनके प्रति विभिन्न मतों का परिचय देना।

विषय आउट कम्स

हिंदी साहित्य के मध्यकालीन युग का विशिष्ट ज्ञान। इतिहास, आलोचना और विचारकों की समझ विकसित होगी।

1– जीवन के दर्शन के साथ–साथ विद्यापति के साहित्य को समझना।
2– भक्तिकालीन सतं कवि कबीरदास और जायसी के लेखन का अध्ययन करने के लिए।
3– सूरदास और तुलसी दास की कृष्ण भक्ति और राम भक्ति कविता का अध्ययन करने के लिए भक्ति सस्ंकृति का दर्शन और हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन पर इसका प्रभाव।
4– जीवन के दर्शन के साथ–साथ दादू दयाल, मीराबाई और रसखान के साहित्यिक कायों को भी समझते हैं।

पाठ्यक्रम –

इकाई– 1 व्याख्या

1– विद्यापति–20 पद (विद्यापति, जय भारती प्रकाशन, इलाबाद) पद क्रमांक–1,4,5,7,8, 11,12, 14,15,16,20,22,23,26,27,28,31,35,36,39,
2– कबीर–कबीर ग्रंथावली–डॉ– श्याम सुन्दर दास गुरूदेव को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), सुमिरण को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), ज्ञान–विरह को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), ज्ञान–विरह के अंग (साखी क्रमांक 1 से 10) परचा को अंग (साखी क्रमांक 1 से
3– जायसी–पद्मा व संपादक–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पद क्रमांक–1,11,16,21, 24, 50,60,65,69,70 (दस पद) (मानसरोवर खण्ड ,वं नागमती वियोग खण्ड)

इकाई– 2

विद्यापति, कबीर और जायसी से सम्बन्ध आलोचनात्मकप्रश्न

इकाई– 3

प्राचीन काल एवं मध्य कालीन काव्य (निर्गुण धारा) का इतिहास : प्रमुख प्रवृत्तियां एवं रचना कारो ंसे सम्बन्धित प्रश्न

इकाई–4

द्रुतपाठ के कवि–चन्दबर दाई,अमीर खुसरो, रैदास, नाम देव से सम्बन्धित लघु उत्तरीय प्रश्न

इकाई– 5

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यपुस्तक से)

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. विद्यापति – संपादक डॉ आनंद प्रकाश दीक्षित
2. कबीर ग्रंथावली – डॉ श्यामदास
3. पद्मावत – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नगेन्द्र

Faculty of Education
Class: M-A- I Sem (HINDI)
Paper II : आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास -I
Code : HIN –102

कोर्स आब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य में आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास का विश्लेषण। विभिन्न लेखकों और उनकी कृतियों का विशिष्ट ज्ञान।

विषय आउटकम्स–

हिन्दी साहित्य के गद्य का विशिष्ट ज्ञान प्रमुख लेखकों और उनकी कृतियों की समझ विकसित होगी।

1– सामाजिक – आर्थिक संदर्भ में आधनुनिक काल के साहित्य और विशेषताओं को समझना और उस कार की सांस्कृतिक और राजनितिक स्थिति।

2– भारतेन्दु युगीन द्विवेदी युगीन काव्यधारा के साहित्य का अध्ययन करने के लरए काव्यधारा छायावादोत्तर कविधारायण

3– भारतेन्दु युगीन द्विवेदीयुगीन छायावाद के प्रख्यात हिंदी लेखन की पहचान और विश्लेषण करने के लिए छायावादी युग और उनके लेखन के विभिन्न कौशल।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1 व्याख्या

1– स्कन्दगुप्त – जय शंकरप्रसाद

2– आधे–अधूरे – मोहन राकेश

3– गोदान – प्रेमचन्द

इकाई– 2

स्कन्दगुप्त, आधे– अधूरे एवं गोदान से समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई– 3

हिन्दी नाटक, रंगमंच एवं उपन्यास के इतिहास की विविध प्रवृत्तियाँ और रचनाकारों पर निबंधात्मक प्रश्न।

इकाई– 4

लघुउत्तरीय प्रश्न–द्रुतपाठ में निर्धारित गद्यकारों से सम्बद्ध लघुउत्तरीय प्रश्न होगे।

1 नाटकार –भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, डॉ–रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल।

2 उपन्यासकार–जैनन्द्र, अमृतलाल नागर, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, मन्नू भंडारी

इकाई –5

वस्तुनिनष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्कन्द गुप्त	–	जयशंकर प्रसाद
2. आधे–अधूरे	–	मोहन राकेश
3. गोदान	–	प्रेमचंद
4. शेखर एक जीवनी	–	अज्ञेय
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास	–	डॉ नगेन्द्र
6. हिन्दी नाटक के सौ बरस	–	शिल्पायन

Faculty of Education
Class: M-A- I Sem (HINDI)
Paper III : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र-I
Code : HIN -103

कोर्स आब्जेक्टिव–

भारतीय पाश्चात्य काव्यशास्त्र की समझ विकसित होगी। कृतियों के विश्लेषण हेतु पाश्चात्य चिंतन का पक्ष स्पष्ट होगा।

विषय आउट कम्स –

पाश्चात्य काव्यशस्त्र की समझ भाषा, कला की आवश्यकता और जीवन के बीच आलोचनात्मक संबंध निर्माण करती है। इससे पाश्चात्य चिंतन परंपरा की समझ विकसित होगी।

1– भारतीय कविताओं को समझते हैं।

2– काव्य रस अरंकार और छन्द के बारे में अध्ययन करना

3– रस की परिभाषा प्रकार महत्व का अध्ययन करना और अरंकार रीति ध्वनि और भारतीय संदर्भ में वक्रोक्ति सम्प्रदाय।

पाठ्यक्रम –

इकाई– 1 संस्कृत काव्य शास्त्र–काव्य–लक्षण–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार रस–सिद्धांत रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, रस अंग, साधारणीकरण, सह्दय की अवधारणा।

अलंकार–सिद्धांत–मूल स्थापना, अलंकारों की वर्गीकरण।

इकाई–2

रीति–सिद्धांत– रीति की अवधारणा, काव्य–गुण एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापना;। वक्रोक्ति सिद्धांत–वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति व ंअभिव्यंजनावाद।

इकाई– 3

ध्वनि सिद्धान्त– ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि–सिद्धान्त की प्रमुख स्थापना; ध्वनिकाव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्रकाव्य।

औचित्य सिद्धान्त–प्रमुख स्थापनां, औचित्य के भेद।

इकाई– 4

हिन्दी कवि–आचार्यो का काव्य शास्त्रीय चिंतन– लक्षण–काव्य परंपरा एवं काव्य शास्त्रीय शिक्षा।

इकाई– 5

हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – शास्त्रीय, व्यक्तिवादी/सौष्ठववादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक मनोविश्लेषणात्मक सौन्दर्य शास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक और समाज शास्त्रीय अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. भारतीय काव्य शास्त्र – प्रो सत्यदेव चौधरी
2. रस सिद्धान्त – डॉ सुंदरलाल कथुरिया
3. रस मीमांसा – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4. ध्वनि सिद्धान्त तथा तुरनीय साहित्य चितंन – डॉ बच्चुलाल अवस्थी
5. हिन्दी साहित्यशस्त्र – डॉ कृष्ण वल्लभ जोशी
6. भारतीय एवं नाश्चात्य काव्य शास्त्र
7. आलोचक और आलोचना – डॉ बच्चन सिंह
8. भारतीय काव्य शास्त्र – डॉ योगेन्द्र प्रताप सिंह
9. रस – डॉ नगेन्द्र
10. सिद्धांत और अध्ययन – बाबु गुलाबराय

Faculty of Education

Class: M-A- I Sem (HINDI)

Paper I : हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि-I

Code: HIN 104

कोर्स आब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना।

इतिहास लेखन, प्रमुख इतिहास ग्रंथ और आधुनिक युगों का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।

विषय आउट कम्स–इतिहास लेखन और साहित्यिक इतिहास की समझ विकसित होगी।

विषय आउट कम्स –

हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

1– हिंदी भाषा और उसके साहित्य की उत्पत्ति को समझना।

2– हिंदी भाषा परिवार की बोलियों की पहचान करना।

3– खड़ीबोली हिंदी के विकास का विश्लेषण।

4– साहित्य के इतिहास की अवधारणा को समझना।

5– हिंदी साहित्य के वर्गीकरण के आधार को समझना।

6– हिंदी के प्रत्येक कार को दिए गए नामों के महत्व और आधार को समझन साहित्य।

7– आदिकाल भत्ति काल रीतिकार और आधुनिककाल की विशेषताओं को समझना

सामाजिक – उस अवधि की सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति।

8– प्रत्येक काल के प्रख्यात हिंदी लेखकों की पहचान करना।

9– हिन्दी साहित्य में उद्भव का कारण समझना।

10– आधुनिक काल की साहित्यिक प्रवृत्ति्यों को समझना।

11– हिंदी नाटक, छोटी कहानियों और उपन्यासों के विकास के इतिहास को समझना।

12– हिंदी साहित्य में महिलाओं और दलितों के प्रवचन को समझना।

पाठ्यक्रम –

इकाई –1

हिन्दी साहित्येतिहास दर्शन एवं पृष्ठभूमि, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा और पद्धतियां, साहित्येतिहास के पुनरालेखन की समस्या, हिन्दी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण।

इकाई –2

आदिकाल की विशेषताएं एवं साहित्यिक प्रवृत्तिया, रासो, फाग, चर्चरी, बेली, षड़यंत्र और बरहमसा। आदिकालीन हिन्दी रासो, सिद्धनाथ जैन साहित्य। अमीर खसुरो की कविता। विद्यापति और उनकी पदावली तथा लौकिक साहित्य। आदिकालीन प्रतिनिधि रचनाकार एवं उनकी रचनाएं आदिकालीन गद्य साहित्य। आदिकाल का समग्र मूल्यांकन।

इकाई –3

भत्तिकाल की ऐतिहासिक सास्कृतिक,राजनीतिक ,सामाजिक, धार्मिम एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि का उद्धव और विकास, भक्ति आन्दोलन का अखखर भारतीय स्वरूप भक्तिकालीन विभिन्न काव्य धाराएं औय उनका विश्रेषण।

इकाई –4

संत काव्य परंपरा, प्रमुख कवि एवं संत साहित्य की विशेषताएं। सूफी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा प्रमुख कवि और विशेषताएं।

सगुण भक्ति काव्य– राम भक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि उनका काव्य। रामभक्ति काव्य की विशेषताएं।

कृष्ण भक्ति काव्य– कृष्ण भक्ति काव्य एवं प्रमुख कवि कृष्ण भक्ति काव्य की प्रभुख विशेषताएं।

भत्ति काव्य की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां।

इकाई–5

रीतिकाल ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि। रीतिकाल की कालसीमा एवं नामकरण, रीतिकालीन कवियों का आचर्यत्व रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध, काव्य धारा के कवि तथा उनका काव्य। रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य में अंतर, रीतिकालीन साहित्य की सामनी विशेषताएं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास – आचायय हजारी प्रसाद द्ववेदी
3. संस्कृति के चार अध्ययन – रामधारी सिंह दिनकर
4. हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नागेन्द्र
6. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास – डॉ राम किशोर शर्मा
7. हिन्दी साहित्य और संवेदना का इतिहास – डॉ रामस्वरुप चतुर्वेदी
8. भक्तिकालीन काव्य चिंतन – डॉ प्रेमशंकर